# पूर्वोत्तर भारत: विश्व पर्यटन का स्वर्ग

सौरभ कुमार दीक्षित

उत्तर-पूर्व भारत के लिए प्रकृति का वरदान है और यह विश्व के सर्वाधिक समृद्ध जैव-भौगोलिक क्षेत्रों में से एक है। पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में पर्यटन आय और रोजगार के अवसर पैदा करने का एक बहुत बड़ा साधन है क्योंकि यह क्षेत्र न केवल वनस्पति और जीव जगत के मामले में अव्वल है बल्कि यहां जैव-विविधता भी भरपूर है। इस क्षेत्र में विभिन्न आर्थिक संसाधनों का खजाना है। समृद्ध सांस्कृतिक और जातीय विरासत के कारण पूर्वोत्तर पर्यटकों के लिए हॉटस्पॉट बनता जा रहा है। इस क्षेत्र के राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य विश्व भर के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। इसके अतिरिक्त चाय पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन और गोल्फ पर्यटन भी पूर्वोत्तर में पर्यटन के आकर्षक रूपों में से कुछ हैं

भारतीय और भाषाई विभाजनों सहित विभिन्न कारकों ने पूर्वोत्तर में आठ राज्यों- असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा और सिक्किम का गठन किया। कई मायनों में पूर्वोत्तर देश के अन्य भागों से अलग है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां एक सौ जनजातियां अलग बोलियां और भाषाएं बोलती हैं। अकेले अरुणाचल प्रदेश में 50 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं। यहां रहने वाली जनजातियां म्यांमार, थाईलैंड और लाओस के निवासियों के बहुत कुछ समान हैं। पूर्वोत्तर की भौगोलिक सेटिंग, टोपोग्राफी, विभिन्न वनस्पतियां और जीव एवं पक्षी जगत, दुर्लभ ऑर्किड और तितलियां, मठ, नदियां, प्राचीन परंपराएं और जीवन शैली का इतिहास, त्योहार और शिल्प, इसे अद्भुत पर्यटन गंतव्य बनाते हैं।

## पर्यटकों की बढ़ती संख्या

पर्यटन मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार पूर्वोत्तर राज्यों में विदेशी पर्यटकों का आगमन वर्ष 2011 से बढ़ा है और वर्ष 2013 की विकास दर वर्ष 2012 से लगभग दुगुनी रही है। वर्ष 2012 में विदेशी पर्यटन यात्राओं (एफटीवी) में वर्ष 2011 के मुकाबले जबरदस्त उछाल आया। आंकड़े कहते हैं कि वर्ष 2013 में यह दर वर्ष 2012 के मुकाबले सौ प्रतिशत बढ़कर 27.9 प्रतिशत हो गई। वर्ष 2011 में विदेशी पर्यटक यात्राओं की संख्या 58,920 थी जोकि वर्ष 2012 में 66,302 हो गई। इसके बाद वर्ष 2013 और 2014 में यह संख्या क्रमश: 84,820 और 1,18,552 पर पहुंच गई। असम में वर्ष 2011 में 16,400 और वर्ष 2012 में 17,543 एफटीवी दर्ज की गईं। अगले वर्ष यानी वर्ष 2013 में यह आंकड़ा 17,638 पर पहुंच गया। आंकड़ों के मुताबिक सिक्कम में वर्ष 2012 में 26,489 के मुकाबले वर्ष 2013 में 31,698 एफटीवी पंजीकृत हुईं। दो साल पहले यानी 2011 में इस राज्य में विदेशी पर्यटक यात्राओं की संख्या 23,602 थी।

भौगोलिक स्थिति, प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों और पूर्व के साथ निकटता के कारण पूर्वोत्तर क्षेत्र देश के लिए विकास का नया वाहक बन सकता है। इस क्षेत्र (एनईआर) में प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता है जिसका समुचित दोहन अब तक नहीं किया गया है। साथ ही यह क्षेत्र देश की एक्ट ईस्ट पॉलिसी के लिए पूर्वी प्रवेश द्वार माना जाता है। क्षेत्र में सीमा पारीय व्यापारिक पहल का लाभ उठाने के लिए पर्यटन उद्योग को पड़ोसी देशों के साथ सहयोग प्राप्त करने की आवश्यकता है। यह क्षेत्र उत्तर में चीन, पूर्व में म्यांमार, दक्षिण पश्चिम में बांग्लादेश और उत्तर पश्चिम में भूटान के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमाएं साझा करता है। यद्यपि भारत के बाकी क्षेत्रों के साथ इस क्षेत्र की कनेक्टिविटी उतनी अच्छी नहीं, फिर भी यहां की 4,500 किलोमीटर से अधिक लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा का लाभ हम उठा सकते हैं और इस क्षेत्र की कायापलट कर सकते हैं।

यह आलेख पूर्वोत्तर भारत की पर्यटन क्षमता को उजागर करने का प्रयास करता है जहां आर्थिक विकास की उज्ज्वल संभावनाएं हैं। इस क्षेत्र की व्यापक क्षमता को समझने के लिए इस क्षेत्र में पर्यटन को मूल रूप से निम्नलिखित हिस्सों में बांटा जा सकता है:

लेखक शिलांग की नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी के एसोसिएट प्रोफेसर और पर्यटन विभाग एवं होटल प्रबंधन के प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने हेमवती नंदन बहुगुण गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी में भी अध्यापन का कार्य किया है। उन्होंने आतिथ्य और पर्यटन के विभिन्न आयामों पर पुस्तकें और पेपर भी लिखे हैं। ईमेल: saurabh5sk@yahoo.com, saurabhdixit@nehu.ac.in, वेबसाइट: www.nehu.ac.in

## खूबसूरत हिल स्टेशन

पूर्वोत्तर भारत में देश के कई प्रमुख हिल स्टेशन हैं। ये हिल स्टेशन अपनी संस्कृति और व्यंजनों के कारण अनूठे हैं जोकि एक दूसरे से भी काफी भिन्न हैं। गैंगटोक सिक्किम की राजधानी और सबसे बड़ा शहर है जहां अनेक मठ हैं। यह पूर्वी सिक्किम जिले का मुख्यालय है। गैंगटोक पूर्वोत्तर भारत के सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में से एक है। ईटानगर 20 अप्रैल, 1974 से अरुणाचल प्रदेश की राजधानी है। यह शहर हिमालय की तलहटी में स्थित है और ऐसे पर्यटकों के लिए मुफीद है जोकि अनछुए प्राकृतिक स्थलों की तलाश करते हैं।

*एक सुरम्य स्थल: चेरापूंजी*

तवांग शहर अरुणाचल प्रदेश के पश्चिमोत्तर भाग में लगभग 3,048 मीटर (10,000 फीट) की ऊंचाई पर स्थित है। तवांग की लगभग 2,085 वर्ग किलोमीटर सीमा उत्तर-पूर्व में तिब्बत और दक्षिण पश्चिम में भूटान से लगती है और सेला श्रृंखला पूर्वी भारत में पश्चिम कामेंग जिले को अलग करती है। मेघालय की राजधानी शिलांग विश्व के सबसे नम स्थान मौसिनराम से सिर्फ 55 किलोमीटर दूर है। स्कॉटिश हाइलैंड्स के समान होने के कारण इसे पूरब का स्कॉटलैंड भी कहा जाता है। यहां पर्यटकों के आकर्षण के अन्य सुंदर और ऐतिहासिक केंद्र हैं: डॉन बोस्को संग्रहालय, तितली संग्रहालय, बॉटनिकल गार्डन, शिलांग पीक, उमियम झील और वार्ड लेक।

## वनस्पति और जीव जगत

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र भारत, भारत-मलय और भारत-चीनी जैव भौगोलिक क्षेत्रों के बीच संक्रमण क्षेत्र के रूप में कार्य करता है और भारत की वनस्पतियों और जीव जगत के लिए भौगोलिक प्रवेश द्वार है। इसीलिए यह क्षेत्र जैविक रूप से महत्वपूर्ण है, क्षेत्रीय विशेषताओं में उच्च है और अनेक दुर्लभ एवं संकटगस्त प्रजातियों का निवास स्थल है। पूर्वोत्तर भारत में उष्णकटिबंधीय वन हैं, विशेष रूप से दुर्लभ प्रजातियों से प्रचुर उष्णकटिबंधीय वर्षा वन। क्षेत्र की निम्न भूमि में उष्णकटिबंधीय अर्ध सदाबहार और नम पर्णपाती वन उपमहाद्वीप के दक्षिण और पश्चिम तक और दक्षिण चीन एवं दक्षिण पूर्वी एशिया तक फैले हैं। क्षेत्र की समृद्ध प्राकृतिक सुंदरता, शांति और दुर्लभ वनस्पतियां और जीव-जंतु क्षेत्र में पारिस्थितिकी पर्यटन के विकास के लिए अमूल्य हैं। 13 प्रमुख राष्ट्रीय पार्क और 30 वन्यजीव अभयारण्य पूर्वोत्तर भारत का खजाना और विरासत कहे जा सकते हैं। कंचनजंगा बायोस्फीयर रिजर्व (सिक्किम), नमदाफा राष्ट्रीय उद्यान (अरुणाचल प्रदेश), काजीरंगा और मानस राष्ट्रीय उद्यान (असम), केइबुल लामजाओ नेशनल पार्क (मणिपुर), मुर्लेन राष्ट्रीय उद्यान (मिजोरम), नागालैंड राष्ट्रीय उद्यान (नागालैंड) और नोकरेक राष्ट्रीय उद्यान (मेघालय) आदि पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र हैं। राज्य सरकारें स्थानीय लोगों को जैविक खेती और जैविक उत्पादों के लाभों के संबंध में शिक्षित कर रही हैं और वे लोग जैविक खेती और क्षेत्र में ग्रामीण एवं जातीय पर्यटन की वृद्धि में यथेष्ट योगदान दे रहे हैं।

## सांस्कृतिक आकर्षण

पूर्वोत्तर क्षेत्र अपनी अलग संस्कृति और पारंपरिक जीवन शैली के लिए भी प्रसिद्ध है। यहां हिंदू, ईसाई, मुस्लिम और बौद्ध धर्म के अनुयायियों का अनूठा संगम है जोकि एक मिश्रित सांस्कृतिक वरदान साबित हुआ है। बौद्ध संस्कृति का क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान है और अन्य धर्मों की तुलना में इसके अनुयायी बड़ी संख्या में हैं। इन राज्यों के हर आदिवासी समूह की अपनी विशिष्ट संस्कृति, लोक नृत्य, मेले, त्योहार, भोजन और शिल्प हैं। मेले और त्योहार, पारंपरिक नृत्य और लोक संगीत जनजातीय

*ग्रामीणों द्वारा उत्पादित स्थानीय फसलें*

समूहों के जीवन का अभिन्न अंग हैं। यहां की जनजातियों द्वारा साल भर में किसी न किसी प्रकार के त्योहार मनाए जाते हैं। नॉर्थ ईस्ट इंडिया नामक फेस्टिव सीजन इस क्षेत्र की संस्कृति और पारंपरिक वेशभूषा को जानने का अच्छा अवसर प्रदान करता है। पूर्वोत्तर भारत के प्रमुख महोत्सवों में असम का बिहू, ब्रह्मपुत्र महोत्सव, नागालैंड का हॉर्नबिल और सेकरेनयी, अरुणाचल प्रदेश का तोर्ग्या मठ महोत्सव, मेघालय का मोनोलिथ और बेहदिनख्लाम महोत्सव, मणिपुर का चापचार कत, मणिपुर का निनगोल चाकौबा और त्रिपुरा का करची पूजा प्रमुख हैं।

हॉर्नबिल राष्ट्रीय रॉक प्रतियोगिता जैसे संगीत और नृत्य के समारोह तथा लोक संगीत एवं आदिवासी नृत्य समारोह क्षेत्र के अनेक राज्यों में आयोजित किए जाते हैं। पूर्वोत्तर भारत की जनजातियां बांस के बने वाद्यों जैसे तमक ड्रम, बांसुरी, खंभ और लमबंग बजाती हैं। डॉन बोस्को स्वदेसी संस्कृति केंद्र (शिलांग), कामाख्या मंदिर (गुवाहाटी), त्रिपुरा सुंदरी मंदिर (दक्षिण त्रिपुरा जिला), सिक्किम के मठ, भगवान कृष्ण मंदिर (इंफाल), कैथोलिक कैथेड्रल (कोहिमा) क्षेत्र के प्रमुख सांस्कृतिक आकर्षण हैं।

*शिलांग के डॉन बॉस्को स्वदेशी संस्कृति केंद्र में प्रदर्शित भूटान की सांस्कृतिक वस्तुएं*

## व्यंजन

पूर्वोत्तर के व्यंजन क्षेत्र की संस्कृति और जीवन शैली को प्रतिबिंबित करते हैं। यहां की खाद्य संस्कृति देश के बाकी हिस्सों से अलग है क्योंकि यह जनजातीय लोगों की पारंपरिक खानपान की आदतों से समृद्ध है। यहां के व्यंजनों में तेल या मसालों का प्रयोग नहीं किया जाता फिर भी ये अत्यंत स्वादिष्ट होते हैं। स्थानीय खुशबूदार हर्ब्स उन्हें और लजीज बनाती हैं। इस क्षेत्र के व्यंजन हल्के, बनाने में आसान और सादे होते हैं और यही इनकी पहचान है। असमिया, मणिपुरी, त्रिपुरी, नागा, अरुणाचली, सिक्किमी, मिजो और मेघालयी- पूर्वोत्तर के खाद्य पदार्थों की व्यापक श्रेणियां हैं। राज्यों के मुख्य खाद्य पदार्थों में चावल के अतिरिक्त सूखी मछली, मसालेदार मांस, स्थानीय हर्ब्स और ढेर सारी हरी सब्जियां शुमार हैं। चिकन, मटन, बतख, कबूतर, कुत्ते कुछ अन्य लोकप्रिय और मांसाहारी व्यंजन हैं, साथ ही चावल की बीयर भी खूब पसंद की जाती है। पूर्वोत्तर के अनूठे खाद्य पदार्थों में जादोह, मोमो, की कपू, आकोल गा या बाय, सौचार, थुप्का तुंग रेमबाय और अचारी बैंबू शूट मुख्य हैं।

## पूर्वोत्तर में पर्यटन विकास के लिए केंद्र सरकार की पहल

भारत सरकार पूर्वोत्तर को दुनिया के पर्यटन मानचित्र पर लाने के लिए अनेक प्रयास कर रही है। देश में पर्यटन के बुनियादी ढांचे के विकास के लिए पर्यटन मंत्रालय ने वर्ष 2014-15 में दो योजनाओं को प्रस्तावित किया: विशिष्ट विषयों पर सर्किटों के एकीकृत विकास के लिए स्वदेस दर्शन और तीर्थयात्राओं के कायाकल्प और आध्यात्मिक संवर्धन पर राष्ट्रीय मिशन के लिए प्रसाद। प्रारंभ में स्वदेश दर्शन के लिए तटीय सर्किट, बौद्ध सर्किट, पूर्वोत्तर भारत सर्किट, हिमालयन सर्किट और कृष्ण सर्किट निर्धारित किए गए। योजना के तहत हाल ही में सात अन्य सर्किट तय किए गए हैं: डेजर्ट सर्किट, आध्यात्मिक सर्किट, रामायण सर्किट, आदिवासी सर्किट, पारिस्थितिकी सर्किट, वन्य जीवन सर्किट और ग्रामीण सर्किट। प्रसाद योजना के तहत 12 शहरों को चिन्हित किया गया है। प्रसाद राष्ट्रीय मिशन में असम का कामाख्या शामिल है। पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के योजना आवंटन का 10 प्रतिशत हिस्सा पूर्वोत्तर राज्यों के लिए निर्धारित है। पिछले तीन वर्षों में पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए आवंटित राशि और किए गए व्यय का ब्यौरा तालिका 1 में प्रस्तुत है।

तालिका 1: भारत के योजना आवंटन पूर्वोत्तर के लिए आरक्षित अंश

| वर्ष | 2012-13 | 2013-14 | 2014-15 |
|---|---|---|---|
| योजना आवंटन | 1050 | 950 | 980 |
| पूर्वोत्तर के लिए निर्धारित 10 प्रतिशत | 105 | 95 | 98 |
| जारी की गई राशि | 145.93 | 113.72 | 149.16* |
| प्रतिशत : | 13.89 | 11.97 | 15.22* |

*: अनंतिम *स्रोत: पत्र सूचना कार्यालय, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार*

इस प्रकार, पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्यटन के विकास की क्षमता व्यापक है जोकि न केवल देश की सुदीर्घ आर्थिक इकाई के रूप में स्थापित की जा सकती है बल्कि यह देश के विकास में भी भरपूर योगदान दे सकती है। इस क्षेत्र पर प्रधानमंत्री के ध्यानाकर्षण से यह स्पष्ट परिलक्षित होता है। हालांकि इस क्षेत्र में अब तक बुनियादी सुविधाओं तथा उचित मार्केटिंग एवं ब्रांडिंग की कमी है। यात्रा परमिट से संबंधित प्रक्रियाओं का अभाव है। कुशल श्रमशक्ति नहीं है और क्षेत्र में व्यापक पर्यटन नीति का भी अभाव है। इसीलिए क्षेत्र की पूरी क्षमता का दोहन नहीं किया जा सका है। ❑

*-(सभी फोटोग्राफ: एस. के. दीक्षित)*

## 61 नये जिलों में बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने 11 राज्यों के 61 नये जिलों में *बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ* योजना का विस्तार किया है। इनमें 4 जिले गुजरात में, 8 हरियाणा में, 2 हिमाचल में, 10 जम्मू-कश्मीर में, 2 मध्य प्रदेश में, 6 महाराष्ट्र में, 2 दिल्ली में, 10 पंजाब में, 4 राजस्थान में, 11 उत्तर प्रदेश में और 3 उत्तराखंड में हैं। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय के संयुक्त प्रयास के अंतर्गत 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत में आरंभ की गई थी। इसके बारे में जागरूकता तथा समर्थन हासिल करने के लिए बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के क्रियान्वयन हेतु पहले चरण में कम सीएसआर वाले 100 जिले चुने गए थे।